संत महंत अनेक मुनिवर, देखीतां दिगंबर।
जाए सहुए प्रघल पूरे, कापडी कलंदर।। १३ ।।

कई सन्त, कई महन्त, कई मुनि, कई दिगम्बर (जैन साधु जो नग्न रहते हैं), कई कापडी (श्वेताम्बर, सफेद वस्त्र धारण करने वाले जैन मुनि), कई कलन्दर (फक्कड़ साधु) दिखाई देते हैं, पर कोई भी माया के प्रवाह से नहीं बचा।

सीलवंती सती कहावे, आरजा अरधांग।
जती वरती पोसांगरी, ए अति सोभावे स्वांग।। १४ ।।

कई सीलवंती (गुणवती) सती कहलाती हैं। कई पति को ही परमेश्वर मानकर पूजा करने वाली (आरजा) पत्नी कहलाती हैं। कई व्रत का पालन करने वाले कई नशीले पदार्थ का सेवन करने वाले ढोंगी दिखाई देते हैं।

मलक मुल्ला मलंग जिंदा, बांग दे मन धीर।
पाक थई थई सहुए पड़िया, मीर पीर फकीर।। १५ ।।

कई मलक (एक सन्त) कई मुल्ला (मौलवी), कई मलंग (बेफिक्र) और कई जिन्द (मुसलमानों के फकीरों का नाम) कहलाते हैं और अपने ढंग से प्रचार-प्रसार करते हैं। अपने को पाक समझकर संसार में पड़े हुए हैं (आगे का ज्ञान नहीं है) चाहे मीर, पीर या फकीर हों।

कई करामात कोटल, औलिया आलम।
बोदला बेकैद सोफी, जाणी करे जुलम।। १६ ।।

कई करामाती हैं। कई कुटिलता दिखाने वाले हैं। संसार में कई औलिया (ज्ञानी) कहलाते हैं। कोई बोदला, कोई बेकैद (कर्मकाण्ड से मुक्त), कोई सूफी (सन्त) तथा नशीले पदार्थों से मुक्त कहलाते हैं। यह सब जानते हुए भी अन्धे बनते हैं।

अनेक मांहें धर्म पाले, पंथ प्रगट थाय।
आंधला जेम संग चाले, ए पाखंड एम रचाय।। १७ ।।

इन्हीं के बीच में अनेक तरह धर्म पालक बनकर अपना पन्थ अलग से चलाते हैं। जिस प्रकार अन्धा साथी लेकर चलता है, उसी प्रकार यह लोग पाखण्ड लेकर चलते हैं। यह संसार पाखण्डी है।

रमें मांहोंमांहें रब्दे, करे परसपर क्रोध।
मछ गलागल मांहें सघले, मूके नहीं कोई व्रोध।। १८ ।।

यह सभी आपस में वाद-विवाद करते हैं। आपस में क्रोध करते हैं। ठीक उसी तरह जैसे दरिया (नदी) में मगरमच्छ अपनी शत्रुता और क्रोध को नहीं छोड़ता है।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ १०६ ॥

पंथ पैंडों की खेंचा खेंच

कोई कहे दान मोटो, कोई कहे गिनान।
कोई कहे विग्नान मोटो, एम वदे सहु उनमान।। १ ।।

कोई कहता है दान बड़ा है, कोई कहता है ज्ञान। कोई विज्ञान को बड़ा कहते हैं और इस प्रकार से सब अपनी अटकल से बोलते हैं।

Nijanand App

कोई कहे करम मोटो, कोई कहे मोटो काल।
कोई कहे ए अगम, एम रमे सहु पंपाल।। २ ।।

कोई कर्म को, कोई काल को बड़ा कहते हैं। कोई कहता है परमात्मा अगम (अगम्य) है। इस तरह से सभी झूठ में मग्न हैं।

कोई कहे तीरथ मोटो, कोई कहे मोटो तप।
कोई कहे सील मोटो, कोई कहे मोटो सत।। ३ ।।

कोई तीर्थ को, कोई तप को, कोई शील को (सन्तोष को) तथा कोई सत (सत्य) को बड़ा बताते हैं।

कोई कहे विचार मोटो, कोई कहे मोटो व्रत।
कोई कहे मत मोटी, एम वदें कई जुगत।। ४ ।।

कोई विचार, कोई व्रत, कोई बुद्धि तथा कोई युक्ति (साधना) को बड़ा बताकर आपस में लड़ते हैं।

कोई कहे करनी मोटी, कोई कहे मुगत।
कोई कहे भाव मोटो, कोई कहे भगत।। ५ ।।

कोई करनी (कर्म) को, कोई मुक्ति को, कोई भाव को तथा कोई भगत (भक्ति) को बड़ा बताते हैं।

कोई कहे कीर्तन मोटो, कोई कहे श्रवन।
कोई कहे वंदनी मोटी, कोई कहे अरचन।। ६ ।।

कोई कीर्तन को, कोई सुनने को, कोई वन्दना को, कोई अर्चना (पूजा-पाठ) को बड़ा बताते हैं।

कोई कहे ध्यान मोटो, कोई कहे धारण।
कोई कहे सेवा मोटी, कोई कहे अरपन।। ७ ।।

कोई ध्यान को, कोई धारणा को, कोई सेवा को तथा कोई अरपन (समर्पण) को बड़ा बताते हैं।

कोई कहे स्वांत मोटी, कोई कहे मोटो पण।
रमे सहुए निद्रा मांहें, रुदे अंधारु अति घण।। ८ ।।

कोई शान्ति को, कोई प्रतिज्ञा को बड़ा बताते हैं। इस प्रकार से सभी अज्ञान के अंधेरे को हृदय में लेकर खेलते हैं।

कोई कहावे अप्रस अंगे, कोई निवेदन।
कोई कहे अमे नेम धारी, पण मूके नहीं मैल मन।। ९ ।।

कोई अपने अंग को शुद्ध रखना ही बड़ा मानते हैं। कोई विनती को, कोई नियम पालन करने को बड़ा मान बैठे हैं, किन्तु किसी के मन के संशय नहीं मिटे।

कोई कहे सत संगत मोटी, कोई कहे मोटो दास।
कोई कहे विवेक मोटो, कोई कहे विस्वास।। १० ।।

कोई सत्संग को बड़ा कहते हैं। कोई दास बनने को बड़ा कहते हैं। कोई विवेक को (विचार करना) तथा कोई विश्वास को बड़ा कहते हैं।

Nijanand App

कोई कहे सदा सिव मोटो, कोई कहे आद नारायण।
कोई कहे आद सकत मोटी, एम करे ताणोंताण।। ११ ।।

कोई सदाशिव (सबलिक), कोई आदि नारायण, कोई आदि शक्ति (सुमंगला) को बड़ा मानकर आपस में खींचातानी करते हैं।

कोई कहे आतम मोटी, कोई कहे परआतम।
कोई कहे अहंकार मोटो, जे आदनों उतपन।। १२ ।।

कोई आत्मा को, कोई परात्म को और कोई अहंकार को जो शुरू से पैदा है, उसको बड़ा मानते हैं।

कोई कहे सकल व्यापी, दीसंतो सहु ब्रह्म।
कोई कहे ए निरगुण न्यारो, आ दीसे छे सहु भरम।। १३ ।।

कोई कहते हैं परमात्मा सबमें व्यापक है। जो दिख रहा है वही ब्रह्म का स्वरूप है। कोई इसको निर्गुण और संसार से अलग बताते हैं। इस तरह से यह संसार का ज्ञान भ्रम से भरा है।

कोई कहे सुंन मोटी, कोई कहे निरंजन।
सार अर्थ सूझे नहीं, पछे वादे वढें वचन।। १४ ।।

कोई कहता है शून्य बड़ा है। कोई निरंजन को बड़ा कहता है, किन्तु सार वस्तु सच्चिदानन्द की किसी को पहचान नहीं है। पीछे आपस में वाद-विवाद करके लड़ते हैं।

कोई कहे आकार मोटो, कोई कहे निराकार।
कोई कहे मांहें जोत मोटी, एम वढें भरया विकार।। १५ ।।

कोई परमात्मा को आकार वाला, कोई निराकार मानते हैं। कोई ओंकार ज्योति स्वरूप को बड़ा मानते हैं और इस तरह से संशय से भरे हुए आपस में लड़ते हैं।

कोई कहे पारब्रह्म मोटो, कोई कहे परसोतम।
वेदने वाद अंधकारे, वादे वढता धरम।। १६ ।।

कोई परब्रह्म को बड़ा मानता है तथा कोई उत्तम पुरुष को बड़ा बताते हैं। वेद की अज्ञानता के अन्धकार में आपस में लड़ते हैं।

प्रगट पंपाल दीसे रमता, अति घणो अंधेर।
कहे अमे साचा तमे झूठा, एम फरे ते अवले फेर।। १७ ।।

इस संसार में साक्षात् झूठ ही खेलता दिखता है। चारों तरफ घोर अंधेरा है। सब कहते हैं कि हम सच्चे हैं और तुम झूठे हो। इसी उलटे चक्कर में घूम रहे हैं।

पंथ सहुना एहज पैया, जे वलग्या मांहें वैराट।
ए विध कही सहु विगते, ए रच्यो माया ठाट।। १८ ।।

समस्त धर्मों का एक ही रास्ता है कि इस चौदह लोक (क्षर पुरुष) में अटके पड़े हैं। इस तरह से सबको हकीकत बताकर माया की यह शान बताते हैं।

Nijanand App

परपंचे सहु पंथ चाले, कहे लेसूं चरण निवास।
ए रामतना जे जीव पोते, ते केम पामे साख्यात।। १९ ।।

सभी धर्म ढोंग के सहारे चल रहे हैं। यह कहते हैं हम परमात्मा के चरण प्राप्त करेंगे। जो जीव इस झूठे संसार के (खेल के) हैं, वह साक्षात् को कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

कोई भैरव कोई अगिन, कोई करवत ले।
पारब्रह्मने पामे नहीं, जो तिल तिल कापे देह।। २० ।।

कोई भैरव झांप खाकर (पहाड़ों से गिरकर) प्राण देते हैं। कोई अग्नि में जलते हैं। कोई काशी के लगे हुए कुएं में आरे से कटते हैं (काशी करवट को भारत सरकार ने बन्द कर दिया है)। इस तरह से तन के टुकड़े-टुकड़े करने पर भी परब्रह्म की प्राप्ति नहीं होती।

अनेक स्वांग रमे जुजवा, असत ने अप्रमाण।
मूल विना जे पिंड पोते, ते केम पामे निरवाण।। २१ ।।

इस तरह संसार में सभी अलग-अलग झूठे और बिना प्रमाण के ढोंग रचकर बैठे हैं। जिनका अपना तन ही सपने का है (जो मिटने वाला है), वह सत्य को कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। १२७ ।।

वैराटनी जाली

अनेक किव इहां उपजे, वैराट मुख वखाण।
वचन कही मांहें थाय मोटा, पण पामे नहीं निरवाण।। १ ।।

इस संसार में बहुत से ग्रंथों की रचना करने वाले हुए जो अपने मुख से वाणी कहकर बड़े कहलाए, परन्तु मोक्ष का रास्ता उन्हें नहीं मिला।

बोले सहु बेसुधमां, कोई वचन काढे विसाल।
उतपन सर्वे मोहनी, ते थई जाय पंपाल।। २ ।।

बेसुधि में कोई-कोई पार के वचन कह भी देते हैं, परन्तु यह सब मोह तत्व से उत्पन्न होने के कारण झूठे हो जाते हैं।

वैराट कहे मारो फेर अवलो, मूल छे आकास।
डालों पसरी पातालमां, एम कहे वेद प्रकास।। ३ ।।

क्षर पुरुष (चौदह लोक) का वैराट उलटा है। इसकी जड़ें आसमान में तथा डालियां नीचे पाताल की ओर फैली हैं। ऐसा वेदों का ज्ञान कहता है।

दोडे सहु कोई फलने, ऊंचा चढे आसमान।
आकास फल मले नहीं, कोई विचारे नहीं ए वाण।। ४ ।।

संसार के सभी ज्ञानी फल लेने के लिए आसमान में चढ़ते हैं, परन्तु आसमान में फल नहीं मिलते। इन वचनों का विचार नहीं करते।

Nijanand App